हाँ मैं रईस मेसी को जानता हूँ

२०१५ की बात है अचानक यह पोस्टर फेस बुक पर हम ने देखा
तो पहचान लिया राम पाल के चर्चे पटना में भी काफी थे
रईस मेंसी से तो हम वाक़िफ़ थे ही
तभी हम ने सोचा क्यों ना दूसरे लोगो तक यह बात पहुंचाई जाये

इस इमाम का नाम महबूब अली है, जो पहले एक कट्टर मुसलमान थे। इनका जन्म कोलकता के एक मुस्लिम परिवार में हुआ था। इन्होने अपनी शिक्षा में बचपन से ही कुरान और इस्लाम धर्म की शिक्षा ली थी। महबूब अली मेरठ की मस्जिद में इमाम रह चुके है और कई सालो तक इमाम रहकर मस्जिद में जिंदगी गुजारी है। इन्होने हिन्दू धर्म की खासियत जानकार वेद की चारों किताब पढ़ी उसके बाद इस्लाम धर्म की कुरान को चुनौती देने लगे। यह जब इमाम थे, तब कुरान की तारीफ़ करते नहीं थकते थे। आज हिन्दू धर्म के रंग में ऐसे रंग है कि हर किसी को इस रंग में रंगना चाहते हैं। महबूब अली ने अपना नाम बदल कर महेंद्र पाल रख लिया। इनका वर्तमान में परिवर्तित नाम पंडित महेंद्र पाल आर्य है।

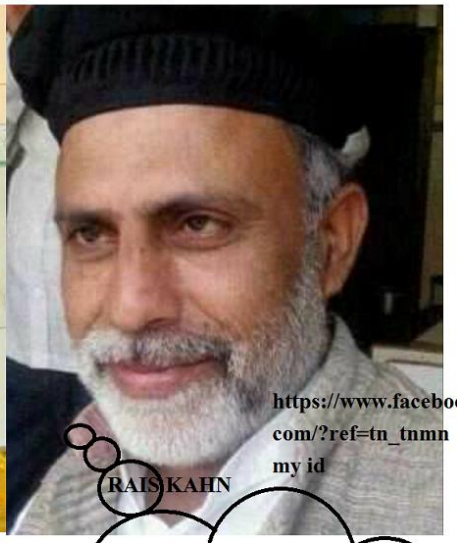

MAHENDER PAL JO BANGAL ME PAIDA HUWA GAREEBI SE TANG AKER UP KE MERATH KI AIK MASZED ME JA KER ISLAM QABOOL KER LIA AWR APNA NAM MAHBUB ALI RAKHKHA .MASZED ME CLEANING KA KAM KERTA THA (BHANGI) KI NOKRI KER LIYA KUCH DINO BAD FIR SE HINDU BAN GYA AWR HER JAGAH JHUINTHE PERCHAR KERNE LAGA KI WAH MUSALMAN THA AWR MASZED KA EMAM THA CHAND AIK AYAT ISKO YAD HAIN KUCH HADESEN ULTY SIDHI BYAN KERTA HAI

वह कहता है की इसने ज़ाकिर नाइक को चैलेंज किया मैं कहता हूँ यह जब चाहे मुझसे बात कर ले मैं वेद पुराण गीता रामायण और सच्ची रामायण से ही बात होगी यह मुसलमानो पर इल्जाम लगता है ज्यादा सादी करने का यह श्री कृष्णा की 16108 बीबियोंकी बात नहीं जानता यह कहता है मुस्लमान बच्चे ज्यायदा पैदा करते हैं यह भानु मति के ६०००० बच्चो को नहीं जनता (मूर्ख है ज्ञानी बना घूम रहा

बात २००४ की मैं फैज़ल पठान अपने पांच दोस्तों के साथ मुंबई से पटना के लिए सफर कर रहे थे

S8 बोगी में ५९ से ६४ सीट हमारी थी हम लोग अपनी सीट पर बैठने के बाद सोचने लगे एक सीट किसकी है वह कौन होगा कहीं बहोत सारा सामान बोरी भर कर न लाये क्यों की हमारे सामान से पूरी जगह भरी थी ठीक ट्रैन छूटने से पहले एक आदमी जींस पेंट जींस सर्ट वह भी सर्ट को इन किये हुवे आया कैजुअल वेयर में कोई सर्ट इन करे तो लोग ज़ाहिल समझते हैं हमने भी वही समझा एक छोटा सा बैग लिए आया और जुते समेत ऊपर की सीट पर चला गया लॉन्ड्री बैग की तरह ४ कपडे वाला बैग सर के निचे रख्खा और लेट गया ऐसा आदमी जो देखने में आधा पागल लग रहा था हम ने सोचा चलो अच्छा है कोई नसेड़ी होगा जिसके पास ना कोई सामान है ना कोई साथी

किनारे वाली सीट पर एक व्यक्त बैठा था देखने में कोई अधिकारी लग रहा था दूसरे किनारे की सीट पर एक काला आदमी बैठा था वह भी ऑफिस वाले कपडे में लग रहा था अगल बगल की सभी कम्पार्टमेंट में VHP विश्व हिन्दू परिषद के लोग बैठे थे वह इलाहबाद विहिप के सम्मलेन में जारहे थे दो दिन के बाद ईद होने की वजह से मुसलमान भी काफी तादाद में थे ट्रैन कल्याण में रुकी एक दलित परिवार के साथ आया

पीछे के कम्पार्ट के किनारे की सीट पर वह दलित मज़दूर तबके का व्यक्त अपनी पत्नी तथा ३ बच्चो के साथ आगया उसके पास एक सीट थी

उसे देख कर विहिप के लोग ऐतराज़ किये बोले तुम्हारी एक सीट है तुम अकेले बैठ सकते हो बाकि तुम्हारे पत्नी और तीन बच्चे इस डिब्बे में नहीं जा सकते वह उसे धमकी देते रहे वह चुप चाप हाँथ जोड़े विनती करता रहा विहिप का एक आदमी उठा और २ पुलिस वालो को ले आया

पुलिस देखते वह आदमी डर गया और सीट से उठ कर खड़ा होगया

हमारे कम्पार्ट के किनारे वाली सीट पर बैठे दलित ने उसका साथ देते हुवे कहा आप इनको क्यों हटाना चाहते हैं उसके बीबी बच्चे ले कर कहाँ जाएगा इतना सुनते ही सभी उसके खिलाफ हो कर कहने लगे इतनी हमदर्दी है तो अपनी सीट पर बैठा लो पुलिस वाले भी उसे डराने लगे बात बढ़ गई पुलिस ने कहा उठा कर बहार फेंक देंगे इतना कहते ही ऊपर लेटा हुवा आदमी अचानक निचे कूदा और उसने हमारे साथी अरबाज़ को हांथों के इसारे से हटने को कहा अंदाज़ ऐसा जैसे कोई अपने बच्चो को इसरा करता है चल बगल हट जा और बोला यह कहीं नहीं जाएगा इसने सीट आरक्षण के पुरे पैसे दिए हैं वेटिंग टिकिट है इसके पास

वेटिंग टिकिट वाले को आप बहार नहीं निकाल सकते बहंस बढ़ने लगी तो पुलिस वाले ने कहा टी सी को बुलावो वह बताएगा किसे कहाँ बैठना है या बाहर जाना है पुलिस वालों की आँखों में आँखे डालते हुवे गुर्रा कर बोला उसे देखते ही किनारे बैठा दलित आदमी भी फिर से जोस में खड़ा होगया
अब टीसी को भी बुलाया गया टीसी आया और रूल्स बुक निकाल कर दिखाते हुवे बोला कानून यह है यदि कोई अपनी सीट पर बैठा कर वेटिंग वाले को ले जाए तो वह जा सकता है लेकिन ज़मीन में नहीं बैठ सकता यदि दूसरे लोग ऐतराज़ करेंगे तो
जींस वाले ने दलित आदमी से कहा आप अपनी सीट इनसे बदल लो इस कम्पार्ट के लोगो को कोई ऐतराज़ नहीं है
हालाँकि हमें ऐतराज़ था लेकिन हम बोल नहीं सके
सीट बदल दी गई पुलिस और टीसी भी चले गए
ट्रैन रफ़्तार से चल रही थी
विहिप के लोग देस पर चर्चा करने लगे देस की बीमार अर्थ वयवस्था और गंदगी आतंकवाद बढ़ती जनसंख्या जैसे सभी मुद्दों पर दलित और मुस्लिम को जिम्मेदार ठहराया जाने लगा
किनारे बैठे शख्स ने उन्हें अपना परिचय दिया मेरा नाम शादिक अली है मैं जर्मनी के भारती दूतावास में कार्यरत हूँ
और विहिप के लोगो से तर्क वितर्क करने लगा बात करने का अन्दाज नरम था सभ्यता दूर से झलक रही थी सभी मुद्दों पर तर्क और आंकड़े देता रहा लेकिन विहिप के लोग उसे धता बताते रहे
हमारी आयु २४ साल थी हमारे साथी भी एक दो साल छोटे बड़े थे
लेकिन हम खुद को बच्चा ही समझ कर सुन रहे थे हमारे साथी जोहर गुस्से से लाल पिले हो रहे थे हम अपने को यतीम और बेसहारा समझने लगे सिर्फ उनके ताने सुनते और मायूसी से अगल बगल झांकते रहते बल्कि मुंह छुपाते रहते बर्दास्त की हद होरही थी लेकिन डिब्बे में विहिप के १५ से ज्यादा लोग जान पड़ते थे वह भी पढ़े लिखे दबंग की तरह हम सहमे हुवे थे दिल में आता था ट्रेन छोड़ दिया जाए या डिब्बा बदली कर लिया जाए

अचानक चाय वाले ने आवाज़ लगाई चाय चाय यह सुनकर ऊपर बैठा जींस सर्ट पैंट वाला निचे कूदा उम्र लगभग 32 साल दिखती थी हरकतें बच्चो वाली कभी सीधे नहीं उतरता न सीधे चढ़ता था हमें उससे नफरत होती
कूदते ही जोर से गुर्राया वोये चाय वाले एक चाय देना
चाय पिया फिर किनारे बैठे सादिक अली से सलाम किया अब हम समझ गए यह मुसलमान है
सादिक़ अली से नरम लहजे में बोला आप रुकिए मेरी बारी है हम समझ न सके यह किस बारी के बार में बोल रहा है
वह विहिप के लोगो की तरफ देखा और बोला हाँ भई बोलो क्या क्या ऐतराज़ हैं सब जवाब मैं दूंगा वह सब हंसने लगे
शादिक़ अली खौफ ज़ादा होकर बोले नहीं नहीं आप को बोलने की ज़रूरत नहीं है
विहिप की तरफ से एक ने ललकारते हुवे कहा बोलिये बोलिये बोलने दीजिये क्या क्या जवाब दोगे क्या तुम मॉस नहीं खाते क्या जुम्मा जुम्मा नहीं नहाते क्या तुम ४ विवाह नहीं करते क्या तुम्हारे नबी ने ९ विवाह नहीं किये थे क्या तुम लोग आतंकी नहीं हो सवालो के बौछार सुन कर हम अपने मन ही मन में इस आदमी को गालियां देने लगे की रही सही इज्जत यह धुलवायेगा
उसने गुर्राती हुई आवाज़ में कहा उछल कूद ना मचाएं एक एक सवाल करें हर मुस्लमान पर पाक साफ़ रहना फ़र्ज़ है जुमा को नहाना जरूरी है बाकि दिनों में यदि वह नापाक हो जाए तो तुरंत नहाये पांच वक़्त नमाज से पहले पाक होना जरूरी है वजू करना जरूरी है वजू में मिस्वाक करना सुन्नत है पेशाब भी करने जाएँ तो पानी से धोएं आप की तरह हाँथ से हिला कर उसका छिता हाँथ और कपड़ो पर नहीं पड़ने देते मुस्लमान से ज्यादा साफ़ सफाई किसी धर्म या मनुस्य में हो ही नहीं सकता जब की आप के धर्म में कहावत है जो रोज नहाये वह भी हिन्दू जो कभी न नहाये वह भी हिन्दू भभूत लगाने वाले नागा साधु कुम्भ में नहाये फिर दूसरे कुम्भ में ही नहाते हैं
पीतल के जिस लोटे में पानी ले कर आप संडास करने जाते हैं उसमे २०० ग्राम से ज्यादा पानी नहीं आएगा उससे ज्यादा तो हम पेशाब करने ले कर जाते हैं
आप उस छोटे से लोटे के पानी से पवित्र हो जाते हैं और हम पेशाब करके भी धोने के बाद भी अपवित्र हैं ?

उनमे एक ने सबको रोकते हुवे कहा बताओ कया तुम लोग ४ पत्नी ४० बच्चे नहीं पैदा करते
शादिक़ अली ने जींस कपडे वाले का परिचय पूंछा उसने अपना नाम रईस मेसी बताया शादिक़ अली ने पढाई पूंछा उसने कहा जितने की इंसान को जरूरत होती है
इसके बाद असली बहंस शुरू हुई रइस मेसी की आवाज़ तेज़ होने लगी
रईस मेसी ने पहला सवाल किया भारत में जेंडर अनुपात क्या है विहिप के वक्ता ने कहा १००० पर ९०० के करीब है
रईस मेसी ने कहा भारत की जनसंख्या कितनी है
उसने कहा १२५ करोड़
रईस मेसी ने पूंछा उसमे महिलाएं कितनी होंगी
विहिप के वक्ता ने कहा ६० करोड़
रईस मेसी ने कहा जब भारत के १० करोड़ मुस्लमान ४ विवाह करेंगे तो ४० करोड़ महिलाएं उनकी पत्नी हो जाएंगे जिसमे हिन्दू मुस्लिम दोनों होंगी
तो आप लोग कया करोगे आप सब का विवाह तो हुवा होगा अब यह बताएं आप सब की पत्नियां भारत की ही हैं या नेपाल और श्रीलंका से लाये हैं
यह जवाब सुन कर हम हंसने लगे
अब बारी थी दूसरे खेमे में मातम की हम बहोत रो चुके थे अब हम हंस रहे थे वह मुंह लटका चुके थे
विहिप की तरफ से एक दूसरे व्यक्त ने पहले वाले को रोकते हुवे कहा
विवाह की बात छोडो यह बताओ क्या तुमने रंगीला रसूल किताब पढ़ा है
उसमे लिखा है तुम्हारे नबी की ९ पत्नियां थीं क्या झूंठ है
रईस मेसी ने कहा आप का सवाल जिस अस्त्र का होगा मेरा जवाब भी उसी अस्त्र का होगा
शाक़िद अली साहब जैसे रईस मेसी क्या बोलने वाला है समझ चुके थे वह फौरन रोकते हुवे बोले ऐसे टॉपिक पर बहस नहीं होनी चाहिए
विहिप के लोग हंसने लगे बोले क्या हुवा हवा निकल गई
रईस मेसी ने गुर्राते हुवे कहा हाँ हमारे नबी की ९ पत्नियां थी सही है
लेकिन अब आप जवाब सुनिए आप के रंगीले भगवन कृष की १६१०८ पत्नियां थी लिंग पुराण में यही लिखा है

जी ने यशोदा को समर्पण किया और कन्या को लाकर कंस के लिये दिया। कंस पुरानी आकाशवाणी को स्मरण करके कन्या को मारने को तैयार हुआ तब कन्या उसके हाथ से छूटकर आकाश में अष्टभुजी देवी बनकर उससे कहने लगी—कि तू मुझे क्या मारता है, तेरा मारने वाला तो संसार में पैदा हो गया।

श्रीकृष्ण की १६१०८ रानियाँ थीं उनमें सबसे प्रिय और श्रेष्ठ रुक्मिणी थी। कृष्ण ने पुत्र के लिये शिव की बहुत समय तक तपस्या की, तब उन्हें चारुदेष्ण, सुचारु, प्रद्युम्न आदि पुत्र शिव की कृपा से प्राप्त हुए। फिर जाम्बवती के आग्रह से कृष्ण ने बहुत तप किया। तब प्रसन्न होकर रुद्र भगवान ने वरदान दिया, तब जाम्बवती के साम्ब पैदा हुआ।

इसके पश्चात् भगवान कृष्ण को जब १२० वर्ष बीत गये तब ब्राह्मण के शाप के बहाने से अपने कुल का नाश किया और जरा नाम के व्याध के अस्त्र से शरीर त्याग कर दिव्यलोक को पधारे। अष्टावक्र के शाप से कृष्ण की भार्या चोरों ने अपहरण कर लीं।

इतना सुनते ही सभी बोखलाहट में एक साथ बोले तुम हमारे भगवान को रंगीला कैसे बोल सकते हो उनके तेवर देख कर हमारे साथी जोहर ने एक चाकू निकला और सेब काटने लगा मैंने पूंछा यह क्या कर रहे हो जोहर बोला इसकी जरूरत

जल्द पड़ने वाली है यह आदमी हम सब को मरवाएगा घर जा रहे थे ईद करने यह मुहर्रम में बदल देगा ट्रैन का डिब्बा कर्बला बनेगा लेकिन कुछ भी हो हम रईस मेसी का साथ देंगे
हालात तेजी से बदल रहे थे
वह अपने भगवन के आदर और सम्मान की बात करने लगे
उनके दूसरे साथ ने कहा अब कोई भगवन या नबी पर बात नहीं करेगा
फिर विहिप के वक्ता ने कहा क्या मुसलमानो के बच्चे ज्यादा नहीं हैं आज की बात करो
रईस मेसी ने कहा लालू के ९ बच्चे नरसिम्हा राव के १० बच्चे बालठाकरे ११ भाई बहन मोदी ६ भाई बहन तोगड़िया के ७ भाई बहन है परमिन तोगड़िया तो तुम्हारा सबसे बड़ा नेता है विश्व हिन्दू परिषद का अध्यक्ष है

तुलसीदास जी ने भी लिखा है
लिखते हैं श्री राम जी के कूल में ही ६०००० पुत्र थे
जब भी रईस मेंसी वेद पुराण का हवाला देते तो वह कहते आज की बात करो
तभी रईस मेंसी ने सवाल किया आप जब बात करते हैं तो हमारे नबी की ९ पत्नी के बारे में पूंछते हैं जब हम आप को जवाब देते हैं तो आप कहते हो आज की बात करो

अस्माकं च कुले पूर्वं सगरस्याज्ञया पितुः ।
खनद्भिः सागरैर्भूमिमवाप्तः सुमहान्वधः ॥ ३२ ॥

एकविंशः सर्गः २४९

हमारे ही कुल में पहले ज़माने में सगर की आज्ञा से उनके साठ हज़ार पुत्रों ने, भूमि को खोदते हुए, अपनी जान गँवा दी थी ॥ ३२ ॥

श्रीरामचन्द्र जी के कुल में ६०००० पुत्रो ने पिता के कहने से ज़मीन खोदने में प्राण गँवा दिए

रईस मेसी ने कहा मैंने आप के बड़े नेतावो के बारे में बताया अब आप हमारे बड़े नेतावो के बारे में बताएं
जी ऍम बनात वाला हामिद अंसारी सलमान खुर्शीद आज़म खान पी ऍम सईद किसी के पास २ से जायदा बच्चे नहीं हैं
विहिप ने अपना प्रवक्ता बदला अब दूसरा आदमी जवाब देने के लिए आया वह बोला अरे भाई हम आवाम की बात कर रहे हैं आप नेता में क्यों चले गए
रईस मेसी ने कहा अवाम में भी यही अनुपात है
विहिप के वक्ता ने पहलु बदला और दूसरा सवाल दागा देस के सारे पशु तुम लोग खा गए मास भक्षण करते हो या नहीं

रईस मेसी ने कहा हम मुस्लमान ४ जानवर खाते हैं गाये भैंस बकरा ऊंट यह सही है लेकिन इन चारो जानवरो की कहीं दुनिया में कोई कमी नहीं है गाये खाते हैं कहना था की हम सभी चौंक पड़े लगा अब मारा मारी होके रहेगी लेकिन तभी रईस मेसी ने कहा जहाँ पाबन्दी नहीं है वहां खाते हैं जैसे केरला तमिलनाडु आन्ध्रा बंगाल जैसे राज्यों में
लेकिन अब देखते हैं की आप किसने जानवर खाते हैं गिन लिया जाए
आप के समाज का एक बड़ा तबका बकरा खाता है लगभग ८०% जिसमे क्षत्री भी आते हैं दूसरा बंजारा समाज बैल भैंस भी खता है आप के समाज के ९८ % लोग मुर्गी खाते हैं आप के समाज के पासी लोग सूअर खाते हैं
बाल्मीकि जी ने रामायण में भी यही लिखा है

मधुमूलफलैर्जीवन्हित्वा मुनिवदामिषम् ।
भरताय महाराजो यौवराज्यं प्रयच्छति ॥ ३० ॥

अब तो मुनिजन कथित (वर्जित) मांसादिक भोजन छोड़, मधु कन्दमूल फल आदि मेरे भोजन के पदार्थ हैं। महाराज ने भरत जी को यौवराज्य दिया है अथवा अब मुझे राजोचित राजस भोजन का परित्याग कर मुनिजनोचित कन्दमूल फल का भक्षण कर वन में रहना होगा । यौवराज्यपद महाराज अब भरत को प्रदान करेंगे ॥ ३० ॥

श्रीराम चंद्र जीकहते हैं अब मुझे मासयुक्त भोजन नहीं मिलेंगे अब मूल कंद खा कर ही वन में रहना होगा

वास्तिकं[1] वहुशुक्लं[2] च गाश्चापि शतशस्तदा ।
दासीदासं च यानं च वेश्मानि सुमहान्ति च ॥३
ब्राह्मणेभ्यो ददौ पुत्रो राज्ञस्तस्यौर्ध्वदैहिकम् ।
ततः प्रभातसमये दिवसेऽथ त्रयोदशे ॥ ४ ॥

भरत जी ने बहुत से सफेद बकरे, सैकड़ों गौएँ, अनेक दास दासी, सवारियाँ और बड़े बड़े मकान महाराज के मृत-कर्म में ब्राह्मणों को दान दिये। तदनन्तर तेरहवें दिन प्रातः-काल ॥ ३ ॥ ४ ॥

कंकाली समाज लोमड़ी कुत्ता बिल्ली चूहा सांप चमगादड़ नेवला जंगली सूअर समेत ऐसा कोई जानवर नहीं जो आप का समाज नहीं खता है उसके बाद असली मांसाहारी आप के साधु बाबा हैं

रजसा ध्वस्तकेशो वा नरः कश्चिददृश्यत ।
आजैश्चापि च वाराहैर्निष्टानवरसंचयैः ॥ ६७ ॥

अथवा धूलधूसरित केशों वाला एक भी आदमी नहीं देख पड़ता था । वहाँ बकरों और शूकरों के मांसों के तथा अन्य अच्छे अच्छे व्यञ्जनों के ढेरों से, ॥ ६७ ॥

एकनवतितमः सर्गः ८११

मांसानि च सुमेध्यानि भक्ष्यन्तां यावदिच्छथ ।
उच्छाद्य स्नापयन्ति स्म नदीतीरेषु वल्गुषु ॥ ५३ ॥
अप्येकमेकं पुरुषं प्रमदाः सप्त चाष्ट च ।
संवाहन्त्यः समापेतुर्नार्यो रुचिरलोचनाः ॥ ५४ ॥

सुन्दर और खाने योग्य मांस जितनी जिसको इच्छा हो उतना खाओ । एक एक पुरुष को सात सात आठ आठ स्त्रियां मिल कर तेल की मालिश कर मनोहर नदियों के तट पर स्नान करातीं और अनेक बड़े बड़े नेत्र वाली स्त्रियां पुरुषों के शरीरों को मलती थीं ॥ ५३ ॥ ५४ ॥

[1]इतीव रामो बहुसंगतं[2] वचः
प्रियासहायः सरितं प्रति ब्रुवन्।
चचार रम्यं [3]नयनाञ्जनप्रभं
स चित्रकूटं रघुवंशवर्धनः ॥ १९ ॥

इति पञ्चनवतितमः सर्गः ॥

रघुवंशवर्द्धन श्रीरामचन्द्र ने सीता जी से मंदाकिनी नदी के सम्बन्ध में इस प्रकार की बहुत सी उत्तम बातें कहीं। तदनन्तर उस रमणीय और नील वर्ण चित्रकूट पर्वत पर सीता को साथ लिये हुए विचरने लगे ॥ १९ ॥

अयोध्याकाण्ड का पञ्चानवेवाँ सर्ग समाप्त हुआ।

—※—

षण्णवतितमः सर्गः

—: # :—

तां तथा दर्शयित्वा तु मैथिलीं गिरिनिम्नगाम्।
निषसाद गिरिप्रस्थे[4] सीतां मांसेन च्छन्दयन्[5] ॥१॥

इस प्रकार श्रीरामचन्द्र जी सीता को मंदाकिनी नदी की शोभा दिखा कर, पर्वत की एक शिला पर बैठ गये और मांस का स्वाद बतला सीता को प्रसन्न करने लगे ॥ १ ॥

---

१ इतीव—एतादृशं। (शि०) २ संगतं—समीचीनं। (शि०) ३ नयनाञ्जनप्रभं—नीलवर्णविशिष्टं। (शि०) ४ गिरिप्रस्थे—पर्वतैकशिलायां। (शि०) ५ छन्दयन्—तत्प्रीतिमुत्पादयन्। (शि०)

जिन्हें आप औघड़ कहते हैं वह मनुस्य का मॉस खाते हैं बिना मनुस्य का मॉस खाये वह सिद्धि पुरुष बन ही नहीं सकते

इतना सारा मॉस खाने के बाद आप के बारे में यही कहा जा सकता है सात मुस खाइके बिलार भइन भगतिन

रईस मेसी के यह अलफ़ाज़ सुन कर हमारी छाती चौडी हो रही थी

हमारे सभी दोस्त रईस मेसी के मुरीद हो चुके थे हम बार बार उनसे चाय लेंगे पानी पिएंगे जोहर कभी सेब काट कर खिलने को कहता तो कभी काजू निकलता बादाम निकालता हमने कहा ईद के सारे मसाले यहीं खाया जाए ईद यहीं मनाया जाए ईद के लिए जो मसाले हम मुंबई से घर ले जारहे थे वह ईद ट्रैन में ही जोहर मना दिया था

हम हंस रहे थे लेकिन शादिक़ अली साहब रईस मेसी से बहोत खफा हो रहे थे धीरे से कहते भाई बस करो दंगा करा दोगे क्या

वह बहोत परेशान हो रहे थे

रईस मेसी पूरी तरह इत्मीनान से उनके सभी सवालो का जवाब और उसके साथ पलट कर सवाल भी कर रहे थे
इसके बाद उन्होंने सवाल किया आप लोग आतंकी कैसे बनाते हैं
यह सवाल उन्होंने पुलिस जवानो के सामने किया जब वहां दो पुलिस वाले खड़े हो कर बहस सुन रहे थे
रईस मेसी ने कहा आप गीता तो पढ़े होंगे उसमे अर्जुन को युद्ध करने के लिए कृष्ण भगवान ने जो श्लोक पढ़ा था उसमे ऐसा क्या था जिससे अर्जुन ने अपने दादा अपने गुरु अपने चचेरे भाई सभी का नरसंहार कर दिया
वह श्लोक है
यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम् ।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे ॥
यही श्लोक उन्हें भी पढ़ाया जाता होगा ऐसा प्रतीत होता है
यह सुनने के बाद विहिप के सभी लोग निशब्द होगये
हम खुस थे हमारे साथ एक ऐसा आदमी था जो विहिप के बड़े बड़े पदाधिकारियों के सामने
हमारी बातों को ऐसे रख रहा है जिसकी हम उम्मीद भी नहीं रख सकते थे
विहिप के लोग के साथ एक साधु कमंडल के साथ आकर सारी बातें सुन रहा था और बार बार बिच में कहता यह बहोत ज़हरीला आदमी है
रईस मेसी ने कहा ज्यादा नहीं इतना तो है ही जहरीले सांप मुझे काटें तो वह खुद मर जाएँ
वार पलट वार होते रहे
एक ने आखिर वह मसला छेड दिया जो शुरू में मना कर दिया गया था की भगवान और नबी पर बात नहीं होगी
उसने कहा तुम्हारे धर्म में बच्चो से विवाह जायज है तुम लोग चचेरी बहन से विवाह करते हो

रईस मेसी ने कहा तुम्हारे ब्रहम्मा जी ने अपनी पुत्री सरस्वती से विवाह किया था
ऋषि अगस्तय ने अपनी पुत्री से विवाह किया था

नव भारत 12 जून 2017

ब्रह्मा ने किया था अपनी ही पुत्री सरस्वती से विवाह

अर्जुन ने कृष्ण की बहन से विवाह किया था जो उनके बुआ की लड़की थी
कर्नाटक अन्धरा परदेस के हिन्दू अपनी सगी बहन की बेटी से विवाह करते हैं
आदिवासियों की कई प्रजातियां आज भी पुत्रियो से विवाह करते हैं
आप मुसलमानो पर इल्जाम न लगाएं

मनुवेद में लिखा है २२ साल का परुष ८ साल की बालिका से विवाह करे ३० साल का पुरुष १२ साल की कन्या से विवाह करें

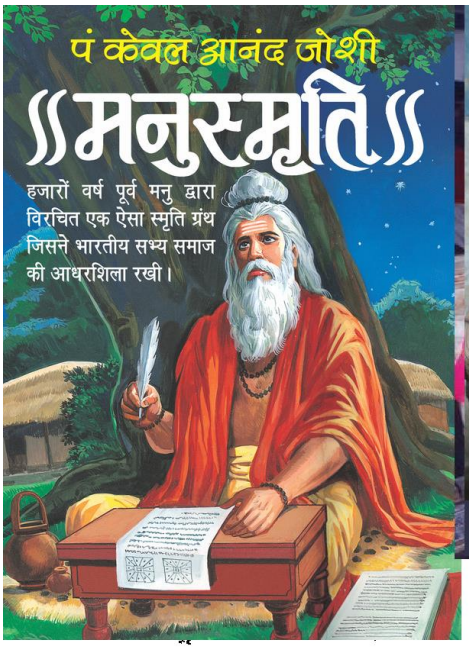

तीस वर्ष का पुरुष बारह-वर्ष की सुन्दरी कन्या से विवाह करे।
या चौबीस वर्ष का आठवर्ष की कन्या से करे। और अग्निहोत्रादि

त्रिंशद्वर्षो वहेत्कन्यां हृद्यां द्वादशवार्षिकीम्।
त्र्यष्टवर्षोऽष्टवर्षां वा धर्मे सीदति सत्वरः॥ ६४॥
देवदत्ता पतिर्भार्यां विन्दते नेच्छयात्मनः।
तां साध्वीं बिभृयान्नित्यं देवानां प्रियमाचरन्॥ ६५॥
प्रजनार्थं स्त्रियः सृष्टाः संतानार्थं च मानवाः।

इस्लाम में ऐसा नहीं है बल्कि जब लड़की बालिग हो जाये तभी विवाह होगा और बालिग मतलब उसे हैज़ आने लगे अब हर देस में मौसम के अनुशार हैज़ आयु की अलग अलग है

अब उनके पास कोई दूसरा सवाल न बचा था तो कहने लगे

जहाँ जहाँ मुस्लमान हैं वहीँ खून खराबा क्यों होता है

तुम्हारे क़ुरान में लिखा है सूरे तोबा आयात नंबर ५ से ११ तक की काफिरों को घेर कर मारो जब चार महीने हुरमत के बीत जाएँ

रईस मेसी ने कहा वही तो मैं सोच रहा था अभी तक यह सवाल क्यों नहीं हो रहा है

सूरे तोबा को आयात नंबर ५ से २१ तक पढ़ते तो पूरी बात समझ में आजाती है

सबसे पहले तो आपने यह कैसे मान लिया की दूसरे धर्म वालो को ही काफिर कह कर क़ुरान में लिखा गया है

जब की क़ुरान में यहूद व नशरा मजूसी और गैरिल मुस्लिमीन लिखा है मतलब गैर मुस्लिम चाहे वह किसी भी धर्म का हो
जब वह तुम्हारे साथ अमन से हैं और वह धोखा या साजिस नहीं करते तो तुम भी उनके साथ अच्छे बर्ताव करो और उनको हिफाज़त से उनके मक़ाम तक पहुंचा दो
अब सवाल के दूसरे हिस्से का जवाब सुनो

महा भारत के युद्ध में १६६५८२९६४५ लोगो की हत्या हुई थी

परन्तु १ अरब ६६ करोड़ तो सभी ने लिखा है

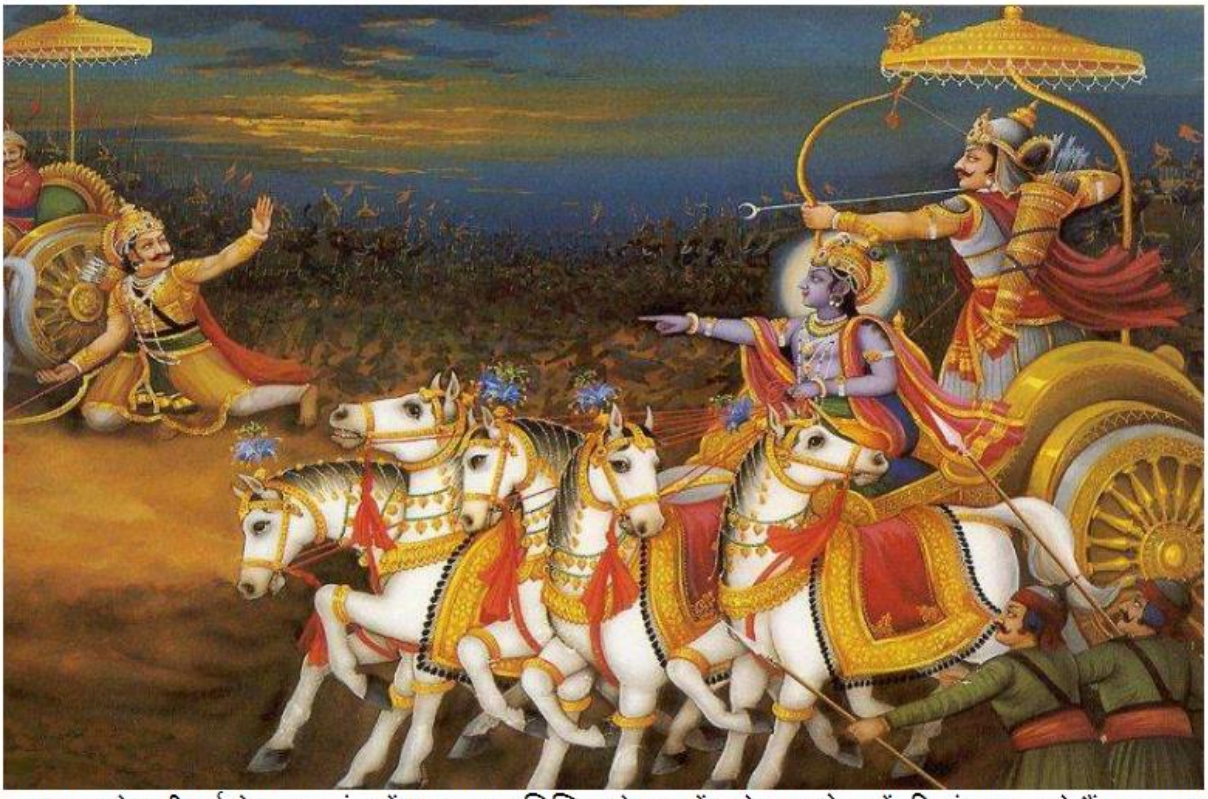

महाभारत के स्त्री पर्व के एक प्रसंग में धृतराष्ट्र युधिष्ठिर से युद्ध में मारे गए योद्धाओं की संख्या पूछते हैं। धृतराष्ट्र के इस सवाल का जवाब देते हुए युधिष्ठिर कहते हैं कि, इस युद्ध में 1 अरब 66 करोड़ 20 हजार वीर मारे गए हैं। इनके अलावा 24 हजार 165 वीरों का कोई पता ही नहीं है।

यह पाकिस्तान बांग्लादेश भारत तीनो की जनसंख्या से ज्यादा लोग को मारने वाले हिन्दू हैं या मुसलमान हैं

लिंग पुराण में लिखा है भगवन परशुराम ने २१ बार धरती को क्षत्री बिहीन कर दिया था मतलब धरती पर एक भी क्षत्री नहीं बचा था

परशुरामका शिवजीसे अपना अभिप्राय प्रकट करना, उसे सुनकर भद्रकालीका कुपित होना, परशुरामका रोने लगना, शिवजीका कृपा करके उन्हें नानाप्रकारके दिव्यास्त्र एवं शस्त्रास्त्र प्रदान करना

तदनन्तर महादेवजीके पूछनेपर परशुरामने कहा—'दयानिधान! मैं भृगुवंशी जमदग्निका पुत्र परशुराम हूँ। आपका दास हूँ। आपके शरणागत हूँ। आप मेरी रक्षा करें।' इसके बाद सारी

घटना विस्तारसे सुनाकर परशुरामने कहा कि मैंने पृथ्वीको इक्कीस बार क्षत्रियशून्य करने तथा मेरे पिताका वध करनेवाले कार्तवीर्यको मारनेकी प्रतिज्ञा की है। आप मेरी प्रतिज्ञाको पूर्ण करें।

इस बातको सुनकर भगवती पार्वती और भद्रकालीने क्रुद्ध होकर परशुरामकी भर्त्सना की। तब परशुराम भगवती गौरी और कालिकाके क्रोधभरे वचन सुनकर उच्चस्वरसे रोने लगे और प्राण-विसर्जनके लिये तैयार हो गये। तब दयासागर भक्तानुग्रहकारी प्रभु महादेवने ब्राह्मण-बालकको रोते देखकर स्नेहार्द्रचित्तसे अत्यन्त विनयपूर्ण वचनोंके द्वारा गौरी और कालिकाका क्रोध शान्त किया और उन दोनोंकी तथा अन्यान्य सबकी अनुमति लेकर परशुरामसे कहना आरम्भ किया।

शंकरजीने कहा—हे वत्स! आजसे तुम मेरे लिये एक श्रेष्ठ पुत्रके समान हुए; अतः मैं तुम्हें ऐसा गुह्य मन्त्र प्रदान करूँगा, जो त्रिलोकीमें दुर्लभ है। इसी प्रकार एक ऐसा परम अद्भुत कवच बतलाऊँगा, जिसे धारण करके तुम मेरी कृपासे अनायास ही कार्तवीर्यका वध कर डालोगे। विप्रवर! तुम इक्कीस बार पृथ्वीको भूपालोंसे शून्य भी कर दोगे और सारे जगत्‌में तुम्हारी कीर्ति

यमाकाशमिवाद्यन्तमध्यहीनं तथाव्ययम् । विश्वतन्त्रमतन्त्रं च स्वतन्त्रं तन्त्रबीजकम्॥
ध्यानासाध्यं दुराराध्यमतिसाध्यं कृपानिधिम् । त्राहि मां करुणासिन्धो दीनबन्धोऽतिदीनकम्॥
अद्य मे सफलं जन्म जीवितं च सुजीवितम् । स्वप्नादृष्टं च भक्तानां पश्यामि चक्षुषाधुना॥
शक्रादयः सुरगणाः कलया यस्य सम्भवाः । चराचराः कलांशेन तं नमामि महेश्वरम्॥
यं भास्करस्वरूपं च शशिरूपं हुताशनम् । जलरूपं वायुरूपं तं नमामि महेश्वरम्॥
स्त्रीरूपं क्लीबरूपं च पुंरूपं च बिभर्ति यः । सर्वाधारं सर्वरूपं तं नमामि महेश्वरम्॥
देव्या कठोरतपसा यो लब्धो गिरिकन्यया । दुर्लभस्तपसां यो हि तं नमामि महेश्वरम्॥
सर्वेषां कल्पवृक्षं च वाञ्छाधिकफलप्रदम् । आशुतोषं भक्तबन्धुं तं नमामि महेश्वरम्॥
अनन्तविश्वसृष्टीनां संहर्तारं भयंकरम् । क्षणेन लीलामात्रेण तं नमामि महेश्वरम्॥
यः कालः कालकालश्च कालबीजं च कालजः । अजः प्रजश्च यः सर्वस्तं नमामि महेश्वरम्॥
इत्येवमुक्त्वा स भृगुः पपात चरणाम्बुजे । आशिषं च ददौ तस्मै सुप्रसन्नो बभूव सः॥
जामदग्न्यकृतं स्तोत्रं यः पठेद् भक्तिसंयुतः । सर्वपापविनिर्मुक्तः शिवलोकं स गच्छति॥
(गणपतिखण्ड २९। ४३—५७)

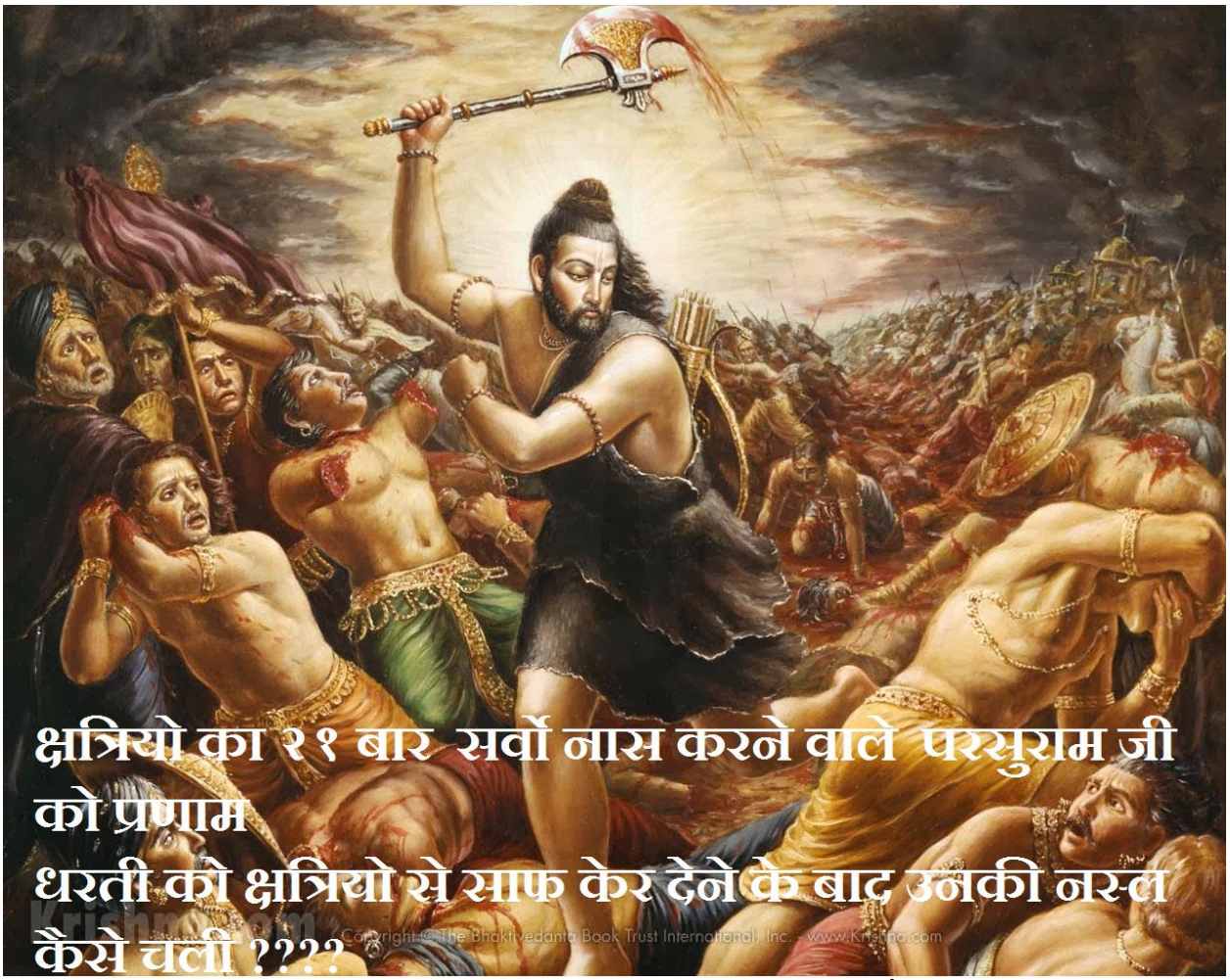

तो सूत जी ने पूंछा एक बार सबको मार दिया तो दुबारा कहाँ से आये तो बताया की उनकी पत्नियों से सम्भोग किया गया जो बच्चे पैदा हुवे उन्हें मारा गया ऐसा २१ बार किया गया

परशुरामका शिवजीसे अपना अभिप्राय प्रकट करना, उसे सुनकर भद्रकालीका कुपित होना, परशुरामका रोने लगना, शिवजीका कृपा करके उन्हें नानाप्रकारके दिव्यास्त्र एवं शस्त्रास्त्र प्रदान करना

तदनन्तर महादेवजीके पूछनेपर परशुरामने कहा—'दयानिधान! मैं भृगुवंशी जमदग्निका पुत्र परशुराम हूँ। आपका दास हूँ। आपके शरणागत हूँ। आप मेरी रक्षा करें।' इसके बाद सारी

घटना विस्तारसे सुनाकर परशुरामने कहा कि मैंने पृथ्वीको इक्कीस बार क्षत्रियशून्य करने तथा मेरे पिताका वध करनेवाले कार्तवीर्यको मारनेकी प्रतिज्ञा की है। आप मेरी प्रतिज्ञाको पूर्ण करें।

इस बातको सुनकर भगवती पार्वती और भद्रकालीने क्रुद्ध होकर परशुरामकी भर्त्सना की। तब परशुराम भगवती गौरी और कालिकाके क्रोधभरे वचन सुनकर उच्चस्वरसे रोने लगे और प्राण-विसर्जनके लिये तैयार हो गये। तब दयासागर भक्तानुग्रहकारी प्रभु महादेवने ब्राह्मण-बालकको रोते देखकर स्नेहार्द्रचित्तसे अत्यन्त विनयपूर्ण वचनोंके द्वारा गौरी और कालिकाका क्रोध शान्त किया और उन दोनोंकी तथा अन्यान्य सबकी अनुमति लेकर परशुरामसे कहना आरम्भ किया।

शंकरजीने कहा—हे वत्स! आजसे तुम मेरे लिये एक श्रेष्ठ पुत्रके समान हुए; अतः मैं तुम्हें ऐसा गुह्य मन्त्र प्रदान करूँगा, जो त्रिलोकीमें दुर्लभ है। इसी प्रकार एक ऐसा परम अद्भुत कवच बतलाऊँगा, जिसे धारण करके तुम मेरी कृपासे अनायास ही कार्तवीर्यका वध कर डालोगे। विप्रवर! तुम इक्कीस बार पृथ्वीको भूपालोंसे शून्य भी कर दोगे और सारे जगत्‌में तुम्हारी कीर्ति

अभी तक दो बार विश्व युद्ध हुवा है दोनों में लड़ने वाले या शुरू करने वाले मुस्लमान नहीं थे जिसमे करोड़ो लोगो की जान गई थी
आप मुसलमानो पर इल्जाम न लगाएं
बिच में टोकते हुवे एक ने सवाल किया जितने आतंकी हैं वह सभी मुस्लमान ही हैं

रईस मेसी ने कहा क्या श्रीलंका के लिट्टे वाले मुस्लमान हैं की अपंजाब के आतंकी मुस्लमान है या नागालैंड के खुखी क्या मुस्लमान हैं असम की उल्फा क्या मुस्लमान हैं नक्सलाइट क्या मुस्लमान हैं राजिस्थान के राजपुताना वाले क्या मुस्लमान हैं
किसने कह दिया की सभी आतंकी मुस्लमान हैं
अब सामने से सवाल आने बंद होगये थे शादिक़ साहब भी अब मुत्मइन थे फिर भी रईस मेसी से कहा सफर में ऐसा करना खतरनाक हो सकता है आप इस तरह बातें न किया करें हालत ठीक नहीं है
अब विहिप की तरफ एक दोस्ताना सवाल किया गया देस को कैसे आगे बढ़ाया जाए देस की तरक्की में रुकावट आरक्षण है या नहीं यह तो मानते हो
यह सवाल होना था की निचे बैठे हुवे दलित परिवार के बच्चे ने संडास कर दिया दलित पुरुष अपने बच्चे को हाँथ से उठा कर उसे धोने के लिए सोचालय की तरफ जाने लगा वहां खड़ा कमंडल वाले साधु ने उसे जोर से डांटा उधर से उधर से जा नीच कहीं का चल उधर मतलब डिब्बे के दूर सिरे पर जो सोचालय था वह बेचारा नज़दीक वाले सोचालय में नहीं जा सका उसे उल्टा भेज दिया डरा कर
अब रईस मेसी ने जवाब दिया यही कारण देस की तरक्की में सबसे बड़ा रोड़ा है एक टिकिट वाले को एक बे टिकिट वाले ने इतनी दूर दौड़ा दिया
जब तक यह नहीं रुकेगा देस तरक्की नहीं करेगा
रईस मेसी के अल्फ़ाज़ पुरे नहीं हुवे होंगे तभी टिकिट चेक करने वाला टी सी आया
रईस मेसी ने कहा साहब साधु बाबा के टिकिट चेक कीजिये उसने टिकिट माँगा साधु के पास टिकिट नहीं था ना उसने दिखाया
रईस मेसी ने टी सी से कहा श्रीमान जी आप को न्यायधीश मान कर आप की अदालत में एक मुकदमा रखना चाहते हैं हम सभी बहोत देर से उलझे हुवे हैं यहाँ पुलिस वाले भी हैं आप भी आगये दोनों पक्षकार भी हैं
मेरा सवाल यह है क्या किसी मौलवी को आपने बे टिकिट कभी पकड़ा है
टी सी ने कहा नहीं कोई मौलवी मुझे २० साल की डुयटी में बे टिकिट नहीं मिला
दूसरा सवाल था क्या कोई साधु कभी टिकिट वाला मिला
टी सी ने हँसते हुवे कहा परिणाम तो आप के सामने ही है साधु कब टिकिट लेने लगा

रईस मेसी ने कहा देस की तरक्की के सबसे बड़े रोड़े की पहचान हो चुकी है क्या अब इसके उपचार पर बहंस हो जाए
विहिप के लोगो में से एक उठा और कहने लगा जितनी बहंस होनी थी हो चुकी अब फालतू की बहंस करना बंद करो मुझे सोना है आराम करना है
जब यह सब चल रहा था तो

किनारे वाली सीट पर बैठा दलित जवान कई बार अपनी पार्टी बदल चूका था जब धर्म की बात आये तो वह विहिप के साथ हो जाता जब आरक्षण की और शूद्र की बात आये तो हमारी तरफ हो जाता

बहंस ख़तम हो चुकी थी दूसरे खेमे में मातम का माहौल था
पता नहीं वह इलाहबाद के अधिवेशन में अब किस् मुद्दे की बात करेंगे
क्यों की उनकी सारी बिमारी का इलाज रईस मेसी कर चुके थे
हम लोग रस्ते भर रईस मेसी को चाचा चाचा कहते और उनके लिए खाने पीने का ख्याल रखते सफर में थे की इलाहाबाद पहुंच गए ट्रैन अभी ठीक से रुकी भी नहीं थी की रईस मेसी चाचा वहीँ उतर गए वह उतर गए उतरने के बाद उलटी सिम्त में चल पड़े
उतरने के बाद हमें ख्याल आया अकेले हैं कहीं कोई दुर्घटना न हो जाए
फिर ख्याल आया क्या ऐसा पहली बार हुवा होगा
हम सभी दूसरे दिन पटना पहुंचे ईद का चाँद होगया था
सुबह नमाज पढ़ने से पहले और पढ़ने के बाद हम हमारे दोस्त रईस मेसी की ही बातें करते रहे फिर हमने फोन किया ईद की मुबारकबाद दिया
उनके किस्से हम अपने सभी घर वालो को रिस्तेदारो और दोस्तों को सुनाये
फिर एक दिन फेस बुक पर किसी ने एक फोटो पोस्ट करके कुछ गलियां लिखा था और सवाल किया था यह रईस मेसी कौन है १२ साल बाद पहचान में तो नहीं आये लेकिन याद आगया तो पहचान भी लिए
तो इस तारीखी वाक़िये को लिख लिया ताकि सनद रहे और जो पूंछे उसे यह किताबचा दे दिया जाए इसको पढ़ कर जवाब देने की हिम्मत बढ़ जाती है